Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 10, Issue 1 | May 2022 - October 2022 | pp. 36-40

श्रीलंका का आर्थिक संकट एवं भारत

डॉ. अनिल कुमार यादव
सहायक आचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कालाडेरा, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र के लेखन का उद्देश्य श्रीलंका में हाल ही के महीनों में (वर्ष 2022 की शुरुआत से) उत्पन्न आर्थिक संकट के कारणों एवं परिस्थितियों का पता लगाना है। श्रीलंका के आर्थिक संकट ने वहाँ की राजनीतिक परिस्थितियों को किस प्रकार से प्रभावित किया है, इसका विश्लेषण भी शोध पत्र में किया गया है। शोध पत्र में श्रीलंका में राजनीतिक एवं वित्तीय अस्थिरता के उभार के कारणों के साथ-साथ उनके प्रभावों पर भी विचार-विमर्श किया गया है। शोध पत्र में श्रीलंका की आर्थिक दुर्दशा के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार चीन की भूमिका पर भी विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। श्रीलंका इस आर्थिक संकट से कैसे उभर सकता है, इस हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी शोध पत्र में प्रस्तुत किये गए हैं। आर्थिक संकट में फंसे श्रीलंका की मदद करके भारत इस अवसर का उपयोग श्रीलंका के साथ अपने राजनयिक संबंधों को संतुलित करने के लिए किस प्रकार कर सकता है, इस पर भी प्रकाश इस शोध पत्र में डाला गया है।

संकेताक्षर—*ईस्टर्न कंटेनर टर्मिनल, करेंसी स्वैप, लाईन ऑफ क्रेडिट, स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स पॉलिसी*

प्रस्तावना

भारत के दक्षिण हिन्द महासागर में अवस्थित श्रीलंका राजनीतिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र है। भारतीय उपमहाद्वीप का हिस्सा समझे जाने वाले इस द्वीप को भारत से पाक-जलडमरूमध्य अलग करता है। ''एशिया महाद्वीप के दक्षिण भाग में स्थित श्रीलंका भारत-पाक वृहत् खंड का स्वतंत्र राष्ट्र है, जो भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत से मिलता-जुलता है।''[1] श्रीलंका का क्षेत्रफल 65,610 वर्ग किलोमीटर है तथा वर्ष 2012 की जनगणना (आधार वर्ष 2011) के अनुसार यहाँ की जनसंख्या 2,03,59,393 थी। ''श्रीलंका की 78 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण तथा 22 प्रतिशत शहरी है।''[2] वर्ष 2012 की जनगणना के अनुसार श्रीलंका में 70.2 प्रतिशत बौद्ध धर्मावलम्बी है, 12.6 प्रतिशत हिन्दू, 9.7 प्रतिशत मुस्लिम एवं 7.4 प्रतिशत ईसाई तथा शेष अन्य है। वर्ष 2012 की जनगणना के अनुसार श्रीलंका में सिंहली लोगों की संख्या सर्वाधिक है, जो कुल जनसंख्या का 74.9 प्रतिशत है। दूसरा समुदाय श्रीलंका के तमिलों का है, जिनकी जनसंख्या 11.1 प्रतिशत है, तीसरा समुदाय मुस्लिमों (मूर) का है, जिनकी जनसंख्या 9.3 प्रतिशत है तथा चौथा समुदाय भारतीय तमिलों का है, जिनकी जनसंख्या 4.1 प्रतिशत है। चाय, रबड़ एवं नारियल जैसी व्यापारिक कृषि उपजों का उत्पादन श्रीलंका में बहुतायत होता है। साथ ही काली मिर्च, लौंग तथा इलायची जैसे मसालों के उत्पादन के लिए भी श्रीलंका प्रसिद्ध देश है। प्राचीन काल में श्रीलंका स्वर्ण नगरी कहलाता था। आज भी श्रीलंका को रत्नद्वीप (Isle of Gems) तथा पूर्व का मोती (Pearl of Orient) के नाम से पुकारा जाता है। श्रीलंका का दक्षिणी भाग रत्न भण्डारों से भरा हुआ है। शायद जितने रत्न इस राष्ट्र में मिलते हैं, उतने संसार के किसी भी देश में नहीं मिलते। हीरा, नीलम, गारनेज, रूबी, चन्द्रमणी जैसे रत्नों के उत्पादन हेतु श्रीलंका प्रसिद्ध रहा है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् श्रीलंका अपने सबसे बुरे दौर से गुजर रहा है। श्रीलंका की आर्थिक व्यवस्था पूर्णतया चौपट हो गई है। श्रीलंकाई सरकार जनता की बुनियादी जरूरतों को पूरा कर पाने में असफल हो गई है। पेट्रोल-डीजल से लेकर दूध और दूसरी खाद्य सामग्री इतनी महंगी हो गई है कि लोग इन्हें खरीद नहीं पा रहे हैं। कभी पर्यटन के लिए दुनिया में मशहूर यह आईलैंड आर्थिक तौर पर तबाह हो चुका है। आवश्यक वस्तुओं की कमी एवं बढ़ती कीमतें, विदेशी मुद्रा की भयंकर कमी तथा जनता के बढ़ते आक्रोश तथा प्रदर्शनों के कारण श्रीलंका के इस आर्थिक संकट ने एक राजनीतिक संकट का रूप धारण कर लिया है।

किसी भी देश में अगर पेट्रोल पंपों पर सेना तैनात करनी पड़े एवं कागज की किल्लत के चलते परीक्षाएँ रद्द करनी पड़े तो सहज ही समझा जा सकता है कि वहाँ के हालात कितने असहज हो चले हैं। श्रीलंका में भी इन दिनों ऐसी ही परिस्थितियाँ बनी हुई है। गहरे आर्थिक संकट ने श्रीलंका में राजनीतिक अस्थिरता भी उत्पन्न कर दी है। श्रीलंका की जनता इस संकट के लिए सरकार की गलत नीतियों को जिम्मेदार मान रही है। देश में आर्थिक संकट की स्थिति में जनता सड़कों पर उतर आयी है एवं सरकार विरोधी प्रदर्शन उग्र होते जा रहे हैं। श्रीलंका में प्रदर्शनकारियों ने मार्च, 2022 के अंत में राजधानी कोलम्बो की सड़कों पर उतरकर सरकार से कार्रवाई एवं जवाबदेही की माँग की। श्रीलंकाई जनता की निराशा एवं गुस्सा 31 मार्च को उस समय फूट पड़ा, जब प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति के निजी आवास के बाहर ईंटें फेंकी एवं आग लगा दी। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे ने 1 अप्रैल, 2022 को राष्ट्रव्यापी आपातकाल की घोषणा की। सरकार की दमनकारी नीति के चलते ये जन प्रदर्शन हिंसक रूप भी धारण कर रहे हैं। विगत 9 मई, 2022 को ऐसे ही एक हिंसक प्रदर्शन में सरकारी बलों की गोलाबारी में 6 लोग मारे गये थे। प्रदर्शनकारी करीब एक माह से सरकार के त्यागपत्र की माँग कर रहे थे।

''देश में खाली हो चुका विदेशी मुद्रा कोष, भारी ऋणग्रस्तता, उच्च मुद्रास्फीति, बिजली व अन्य आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी आदि अनेक आर्थिक संकटों में फंसे श्रीलंका में सरकार के त्यागपत्र के लिए प्रदर्शनों का सिलसिला जारी था। ऐसे में प्रधानमंत्री के अतिरिक्त सभी मंत्रियों ने मंत्रिमण्डल से त्यागपत्र 3 अप्रैल, 2022 को दे दिया था।''[3] श्रीलंका के प्रधानमंत्री महिन्दा राजपक्षे ने भी प्रदर्शनकारियों के हिंसक प्रदर्शन के बाद 9 मई को अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। प्रदर्शनकारी राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे के इस्तीफे की माँग पर भी अड़े हुए थे, परन्तु गोटाबाया राजपक्षे ने अपने पद से त्यागपत्र देने से मना कर दिया।

श्रीलंका में ट्रेड यूनियनों द्वारा आयोजित देशव्यापी हड़ताल को विफल करने के लिए राजपक्षे सरकार ने 6 मई, 2022 को श्रीलंका में पुनः राष्ट्रीय आपात की घोषणा कर दी। 9 मई को महिन्दा राजपक्षे के इस्तीफे के पश्चात् विरोधी दल के नेता रानिल विक्रमसिंघे को श्रीलंका का नया प्रधानमन्त्री नियुक्त किया गया। श्रीलंका की सरकार ने 51 बिलियन डॉलर के ऋण के भुगतान में असमर्थता जाहिर करते हुए 5 जुलाई, 2022 को नए प्रधानमंत्री ने श्रीलंका को दिवालिया घोषित कर दिया। 9 जुलाई, 2022 को प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति भवन पर कब्जा कर लिया। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे श्रीलंका छोड़कर विदेश भाग गये।

श्रीलंका में आर्थिक संकट हेतु उत्तरदायी कारण

श्रीलंका के आर्थिक संकट के लिए मूल रूप से दो तत्त्व जिम्मेदार है। पहला बढ़ती हुई महँगाई एवं आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओं जैसे खाद्य सामग्री अथवा डीजल तथा पेट्रोल की कमी तथा दूसरा विदेशी मुद्रा भण्डार की कमी। विदेशी मुद्रा की कमी के कारण आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति आयात के द्वारा भी नहीं की जा सकती है। श्रीलंका सरकार के विदेशी मुद्रा भण्डार में गत 2 वर्षों में तेजी से कमी आई है। ''2019 में श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भण्डार 7.5 बिलियन डॉलर का था, जो जुलाई, 2021 में घटकर मात्र 2.8 बिलियन डॉलर रह गया है। उसके बाद भी उसमें निरन्तर कमी आ रही है तथा 2022 में सरकार के पास चंद दिनों के व्यय के लिए भी विदेशी मुद्रा नहीं है। सरकार की खस्ता होती माली हालत के कारण विश्व बैंक ने श्रीलंका का दर्जा 2020 में अपर मिडिल इनकम देश (Upper Middle Income country) से घटाकर मिडिल इनकम देश (Middle income country) कर दिया है।''[4] श्रीलंका की वर्तमान राजपक्षे सरकार जब 2019 में पुनः सत्ता में आई थी, तब श्रीलंका की माली हालत अच्छी थी, परन्तु सरकार की गलत एवं अव्यवहारिक नीतियों के कारण श्रीलंका वित्तीय संकट के गर्त में चला गया है।

श्रीलंका के आर्थिक संकट हेतु निम्नलिखित कारण उत्तरदायी है—

1. विदेशी ऋण का अत्यधिक भार—श्रीलंका की राजपक्षे सरकार ने अपने प्रथम कार्यकाल से लेकर हाल ही के समय तक बड़े स्तर पर विदेशी लोन लेकर श्रीलंका में कई मेगा परियोजनाओं को लागू किया। श्रीलंका को ऋण उपलब्ध करवाने वाले राष्ट्रों में चीन अग्रणी था। ''चीन ने श्रीलंका की अर्थव्यवस्था में भारी निवेश कर स्वदेशी अर्थव्यवस्था के वहां प्रवेश का रास्ता खोला है। चीन ने श्रीलंका के बुनियादी ढ़ांचे में भारी निवेश किया है।''[5] परन्तु जब श्रीलंका पर चीन के ऋण का भार अत्यधिक बढ़ गया, तब श्रीलंका सरकार को लोन के एवज में हम्बनटोटा बन्दरगाह चीन को वर्ष 2017 में 99 वर्ष की लीज़ पर देना पड़ा। इसी प्रकार चीन से उच्च ब्याज दर पर भारी ऋण लेकर श्रीलंका सरकार ने कोलम्बो सिटी प्रोजेक्ट का कार्य शुरू किया। नई कोलम्बो सिटी के प्रशासनिक प्रबंधन में चीन की बराबर की हिस्सेदारी होगी, जिसका प्रभाव श्रीलंका की सम्प्रभुता पर भी पड़ेगा। श्रीलंका के राजनीतिक समूहों के भारी विरोध के बावजूद भी सरकार ने इस परियोजना को लागू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप श्रीलंका पर चीन के ऋण का भार और अधिक बढ़ गया। वर्ष 2021 में श्रीलंका की कर्ज अदायगी का भार 4 बिलियन डॉलर था, जिससे श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भण्डार विदेशी ऋण को चुकाने में ही खर्च हो गया। श्रीलंका के वर्तमान आर्थिक संकट में श्रीलंका की ऋणग्रस्तता का बहुत बड़ा योगदान है।

2. कोविड महामारी एवं आतंकी घटनाओं के कारण पर्यटन को झटका—श्रीलंका एक द्वीपीय राष्ट्र है तथा अपने दर्शनीय स्थलों के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। पर्यटन के कारण सरकार को जहाँ एक तरफ विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है, वहीं स्थानीय लोगों को भी आय एवं रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। श्रीलंका की जीडीपी में पर्यटन की हिस्सेदारी करीब 12.5 प्रतिशत है। अप्रैल, 2019 में ईस्टर के मौके पर कोलम्बो के चर्चों एवं होटलों में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों में 260 से ज्यादा लोग मारे गए थे, जिसके परिणामस्वरूप पर्यटकों की संख्या में तेजी से गिरावट आयी। दूसरी ओर वर्ष 2020 से कोविड महामारी की शुरुआत के पश्चात् श्रीलंका का पर्यटन उद्योग लगभग तबाह है। कोविड संबंधी प्रतिबंधों एवं महामारी के खौफ ने पर्यटन गतिविधियों पर विराम लगा दिया। महामारी के चलते लगी पाबंदियों के कारण टुरिस्टों की आवक बंद हो गयी। अभी हाल ही में बिगड़े हालातों के कारण कई देशों ने अपने नागरिकों को श्रीलंका की यात्रा करने से बचने की सलाह दी है। इन सब घटनाओं से श्रीलंका में पर्यटन से होने वाली विदेशी मुद्रा का नुकसान हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप श्रीलंका की आर्थिक स्थिति पर्याप्त कमजोर हुई है।

3. ऑर्गेनिक कृषि की शुरुआत एवं रासायनिक खाद पर प्रतिबंध—श्रीलंका की राजपक्षे सरकार ने अप्रैल, 2021 में अचानक ही रासायनिक खाद के आयात को प्रतिबंधित कर दिया। इसका कारण ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देना बताया गया। श्रीलंकाई सरकार ने श्रीलंका को रातों-रात सौ फीसद जैविक खेती वाला देश बनाने की घोषणा कर दी। जैविक कृषि की दिशा में रातों-रात कदम बढ़ाना संभव नहीं था। इसका परिणाम यह हुआ कि पारम्परिक कृषि उत्पादन को भी गहरा आघात पहुँचा। हालांकि बाद में रासायनिक उर्वरकों के उपयोग संबंधी फैसले को पलट दिया गया, परन्तु तब तक बहुत देर हो गई थी और एक विकराल खाद्य संकट दस्तक देने की तैयारी कर चुका था। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों पर रातों-रात आरोपित विनाशकारी प्रतिबंध ने खाद्य कीमतों को और बढ़ा दिया। इसका ही परिणाम है कि आज श्रीलंका वित्तीय एवं खाद्य संकट से इतना त्रस्त हो गया है कि उसकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है।

4. राजपक्षे सरकार की लोकलुभावन राजनीति—वर्ष 2019 में श्रीलंका में सत्ता में परिवर्तन हुआ। गोटाबाया राजपक्षे की सरकार ने अपने चुनावी अभियानों में निम्न कर दरों एवं किसानों के लिए व्यापक रियायतों का वादा किया था। लोकलुभावन राजनीति के लोभ में सरकार ने करों की दरों में भारी कटौती कर दी। इससे न केवल राजस्व की क्षति हुई, बल्कि सरकारी खजाने के गड़बड़ाते गणित को देखते हुए वैश्विक क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों ने श्रीलंका की साख पर सवाल खड़े करने शुरू कर दिये। इससे कोलम्बो के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय तंत्र से किफायती दर पर वित्तीय संसाधन जुटाना दूभर होता गया। इसके लिए श्रीलंका चीन जैसे देश पर और निर्भर होता गया, जिसका उस पर पहले से ही कड़ी शर्तों वाले कर्ज का अंबार था।

5. यूक्रेन युद्ध का प्रभाव—श्रीलंका के वित्तीय संकट को बढ़ाने में यूक्रेन युद्ध भी प्रमुख तात्कालिक कारण है। रूस-यूक्रेन युद्ध 24 फरवरी, 2022 से चल रहा है। इस युद्ध के परिणामस्वरूप विश्व बाजार में तेल एवं खाद्यान्न की कीमतों में अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ोतरी हुई है। श्रीलंका तेल एवं खाद्यान्न दोनों के आयात पर निर्भर है। बढ़ी हुई कीमतों की वजह से श्रीलंका तेल एवं खाद्यान्न के आयात हेतु अधिक मुद्रा चुकाने के लिए बाध्य है, परन्तु उसके पास विदेशी मुद्रा की अत्यधिक कमी है।

कुल मिलाकर श्रीलंका की राजपक्षे सरकार की अदूरदर्शी नीतियों एवं विपरीत तात्कालिक परिस्थितियों के कारण श्रीलंका को अभूतपूर्व आर्थिक संकट से गुजरना पड़ रहा है। श्रीलंका की सत्ता पर राजपक्षे परिवार की पकड़ एवं राजपक्षे परिवार द्वारा व्यापक स्तर पर किया गया भ्रष्टाचार आज श्रीलंका के आर्थिक संकट का कारण रहा है।

श्रीलंका के वित्तीय संकट के निवारण में भारत की भूमिका

भारत ने सदैव अपने पड़ोसी राष्ट्रों के प्रति सद्भाव एवं सहयोग की नीति अपनाई है। भारत निरन्तर श्रीलंका के साथ अपने संबंधों को साधने का प्रयास कर रहा है। वास्तव में भारत की सबसे ज्यादा चिंता सुरक्षा को लेकर रही है। अपने पड़ोस में चीन की बड़ी उपस्थिति भारत को परेशान कर रही है। हिन्द महासागर में भारत का प्रभाव उसके आर्थिक एवं सामरिक हितों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। श्रीलंका में चीन का बढ़ता हुआ प्रभाव उसमें सबसे बड़ी बाधा है। ''चीन के प्रभाव के कारण श्रीलंका निरन्तर भारत के सामरिक व आर्थिक हितों की अनदेखी कर रहा है। वर्ष 2021 में चीन के प्रभाव के कारण ही श्रीलंका की राजपक्षे सरकार ने कोलम्बो पोर्ट में ईस्टर्न कंटेनर टर्मिनल के निर्माण का समझौता रद्द कर दिया। श्रीलंका ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किये थे तथा इसके तहत ईस्टर्न कंटेनर टर्मिनल का निर्माण भारत व जापान द्वारा संयुक्त रूप से किया जाना था।''[6] इसके बावजूद श्रीलंका ने जब आर्थिक संकट के समय भारत से सहायता की माँग की, तो भारत ने आगे बढ़कर श्रीलंका को इस आर्थिक संकट से उभारने हेतु भरपूर मदद दी है। भारत द्वारा श्रीलंका को जनवरी, 2022 से अग्र प्रकार से सहायता उपलब्ध करवाई गई है—

1. ''वर्ष 2022 के आरम्भ से भारत द्वारा श्रीलंका को 1.4 बिलियन डॉलर से अधिक की राहत प्रदान की गई है, जिसमें 400 मिलियन डॉलर का करेंसी स्वैप, 500 मिलियन डॉलर का ऋण स्थगन (Loan deferment) और ईंधन आयात के लिए 500 मिलियन डॉलर का 'लाईन ऑफ क्रेडिट' शामिल है।''[7]
2. भारत ने श्रीलंका को खाद्यान्न, दवाइयाँ एवं अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदने हेतु एक बिलियन डॉलर का ऋण सस्ती दरों पर उपलब्ध कराया है।
3. एशियन क्लेरियरिंग यूनियन फ्रेमवर्क के अन्तर्गत भारत ने श्रीलंका को 1 बिलियन डॉलर का ऋण प्रदान किया है।
4. भारत द्वारा श्रीलंका को मार्च, 2022 के मध्य से अब तक 2,70,000 मीट्रिक टन से अधिक डीजल और पेट्रोल उपलब्ध कराया गया है।

इस प्रकार भारत श्रीलंका को आर्थिक संकट से उभारने के लिए अब तक 3.4 बिलियन डॉलर की सहायता दे चुका है। इसके साथ ही अप्रैल, 2022 में तमिल नव वर्ष के उपलक्ष्य में भारत ने 11,000 मीट्रिक टन चावल श्रीलंका को भेंट किया है तथा आवश्यक दवाएँ भी श्रीलंका को उपलब्ध करवायी है। जून माह में भारत का एक प्रतिनिधिमण्डल कोलम्बो गया था एवं इस दौरान अधिक मदद उपलब्ध कराने पर दोनों पक्षों में बातचीत हुई है।

आर्थिक संकट से निपटने हेतु श्रीलंका के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

1. श्रीलंकाई सरकार को देश में आर्थिक सुधारों हेतु तत्काल आवश्यक कठोर कदम उठाने चाहिए।
2. मौजूदा संकट से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों के साथ ही जातीय संघर्ष में गृह युद्ध से प्रभावित उत्तरी एवं पूर्वी प्रान्तों के आर्थिक विकास हेतु एक रोडमैप तैयार करने हेतु सरकार को तमिल राजनीतिक नेतृत्व के साथ हाथ मिलाना चाहिए।
3. घरेलू कर राजस्व को बढ़ाने एवं उधारी (विशेष रूप से बाहरी स्रोतों से सॉवरेन उधारी) को सीमित करने के लिए सरकारी व्यय को कम करने जैसे उपयुक्त कदम उठाने होंगे।

4. रियायत एवं सब्सिडी संबंधी व्यवस्था के पुनर्गठन के लिए सरकार को कड़े कदम उठाने चाहिए।

निष्कर्ष

श्रीलंका का आर्थिक संकट वहाँ की सरकार की गलत नीतियों एवं निर्णयों का परिणाम है। चीन के आर्थिक चंगुल में फंसकर श्रीलंकाई सरकार ने गलत आर्थिक निर्णय लिए है, जिसका खामियाजा उसे भुगतना पड़ रहा है। भारत ने अपने 'पड़ोस पहले' की नीति के अन्तर्गत चीन एवं श्रीलंका की सामरिक नजदीकी को अनदेखा करते हुए श्रीलंका की संकट के समय सहायता की है। यह भारत के लिए भी उपयुक्त अवसर है कि वह श्रीलंका की आवश्यक सहायता कर चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स पॉलिसी' से श्रीलंकाई द्वीप समूह को दूर रखने में सफल हो सकता है तथा इस क्षेत्र में चीनी उपस्थिति एवं चीनी प्रभाव को नियंत्रित कर सकता है। श्रीलंका भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। भारत इस अवसर का उपयोग श्रीलंका के साथ अपने राजनयिक संबंधों को संतुलित करने के लिए कर सकता है, जो चीन के साथ श्रीलंका की निकटता के कारण प्रभावित हुए है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, विजय, इण्डिया एण्ड श्रीलंका-चाइना रिलेशन, 1948-84, उप्पल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1986, पृ.सं. 01
2. यादव, मोहर सिंह एवं मीना, पी.सी., एशिया का भूगोल, यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा.) लि., जयपुर, 2007, पृ.सं. 203
3. प्रतियोगिता दर्पण, जून, 2022, पृ.सं. 14
4. प्रतियोगिता दर्पण, अगस्त, 2022, पृ.सं. 74
5. फड़िया, बी.एल. एवं फड़िया, कुलदीप, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020, पृ.सं. 316
6. प्रतियोगिता दर्पण, सितम्बर, 2021, पृ.सं. 57
7. दृष्टि, 4 अप्रैल, 2022